शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रामदरश मिश्र का काव्य संग्रह 'आग की हँसी' : संवेदना और शिल्प

दीपक कुमार पाण्डेय (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

रामदरश मिश्र हिंदी के वरिष्ठ कवि कथाकार, निबंधकार और आलोचक हैं। आपने काव्य और कथा के विभिन्न रूप शैलियों में तो लिखा ही है, आत्मकथा, यात्रावृत्त डायरी, संस्मरण आदि विधाओं में भी अपनी कलम चलाई है। आपकी रचनाओं में जमीनी यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की अनुगूंज है। वर्ष 2012 में प्रकाशित 'आग की हँसी' प्रसिए काव्य संग्रह है, जिस पर वर्ष 2015 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। पुरस्कृत काव्य संग्रह 'आग की हँसी' में नया स्पंदन और दृष्टि की सघनता है। इसमें जीवन के संघर्ष बाजार की गिरफ्तए मानवीय करुणा, राजनीतिक त्रासदीए प्रकृति तथा भविष्य के प्रति आशा का समन्वित चित्र मिलता है। इस संकलन में संकलित कविताएं मानवीय मूल्यों से सरोकार रखती हैं जिनकी खोज मानव जीवन में की गई है। इनमें अभिव्यक्त विचार एवं अनुभव सहज तथा स्पष्ट हैं, जिनसे पाठक अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 'आग की हँसी' में वर्णित मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा प्रकृतिपरक संवेदनाओं का अध्ययन करना तथा उसके शिल्पगत पक्ष, भाषा शैली, प्रतीकए बिंब का आलोचनात्मक विवेचन करना है।

मुख्य शब्द : *आग, बाजार, संवेदना, जंगल और सभ्यता, आशाए स्वावलंबन, आत्मबोध*

प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कविता ने स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में आए व्यापक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को गहराई से अभिव्यक्त किया है। इस दौर के कवियों ने आधुनिक जीवन की जटिलताओंए विघटित होते संबंधों, मूल्य संकट, बाजार की गिरफ्त और मनुष्य के अकेलेपन को कविता का विषय बनाया है। रामदरश मिश्र का रचना संसार जीवन के यथार्थ से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। इन्होंने आधुनिक जीवन की समस्याओं को गहरी मानवीय संवेदना के साथ देखा है। मूलतः संवेदना का संबंध मानव के मन से होता है। किसी वस्तु को देखकर मन में जो तरह.तरह के भाव उत्पन्न होते हैंए वहीं संवेदना है।"**1** विभिन्न अवस्था में संवेदनाएं भी भिन्न.भिन्न होती हैं।

'आग की हँसी' संकलन में कुल 52 कविताएं संकलित हैं। ये कविताएं विविध विषयों पर केंद्रित हैं और संवेदना के विभिन्न फलक को विस्तार देती है। प्रारंभ में ही 'आग की हँसी' शीर्षक कविता राजनीति के सफेदपोशों के काले चरित्र को उजागर करती है। कवि का कहना है कि पेट भरे हुए अघाये लोग अपनी लच्छेदार बातों और भाषणों से समाज में विद्रोह भड़काकर उसकी आंच पर अपनी रोटियां सेंक रहे हैं :

"आप ज़रा आईना देखिए श्रीमान्
आपकी शीतल शालीन हँसी से

कैसे धीमी-धीमी आग फूट रही है
और धीरे-धीरे
अपनी लपेट में ले रही है दिशाओं को
महाज्वाला बनकर"**2**

चूल्हे की आंच पर सिंकीं रोटी से पेट की ज्वाला बुझती हैए परन्तु आदमी की हँसी में छिपी हुई आग धीर-धीरे चारों दिशाओं को अपने लपेटे में ले रही है और फिर भी जनता को लगता है कि आग चूल्हे ने लगाई है। भारतीय राजनीति की विद्रूपता को व्यक्त करते हुए रामदरश मिश्र ने भोली-भाली जनता का भोलापन प्रकट किया है। जहाँ जनता नेताओं की बातों में भूल जाती है कि उसकी बदहाली के असली जिम्मेदार ये नेता ही हैं :

"फिर भी आपकी माया है कि
लोग समझते हैं
आग चूल्हे ने लगाई है"**3**

सन 1992 में रामदरश मिश्र का काव्य संग्रह 'आग कुछ नहीं बोलती' में कवि कहता है कि आग चुपचाप माचिस की डिब्बी में पड़े-पड़े प्रतीक्षा करती रहती हैए किसी कुशल गृहिणी के हाथों की :

"आग कुछ नहीं बोलती
वह अपने को समेट कर
चुपचाप माचिस की डिबिया में पड़ी होती है
और प्रतीक्षा करती रहती है
किसी गृहिणी के हाथों की
जो उसे
गरम-गरम रोटी में बदल देगी।"**4**

1992 में आग का ध्येय रोटी में ढ़ल जाना था, परन्तु 2012 आते-आते वह आग उस रोटी के जरिए पेट से मानस तक की यात्रा करती है और होठों से फूट पड़ने वाली हँसी के रूप में चारों दिशाओं को आक्रान्त कर जाती है।

समाज में मौजूद ऐसे दोहरे चरित्र जीने वालों की पोल-पट्टी खोलते हुए कवि ने उनकी संवेदनहीनता को उघाड़ कर रख दिया है। इसे हम नारी यातना पर कविता शीर्षक कविता में देख सकते हैं :

"वे बंद कमरे में बैठे हुए
नारी यातना पर कविता लिख रहे थे
संगिनी की तरह बगल में भी विराजमान थी सुरा सुंदरी।"**5**

जब उन्हीं की सताई नारी उनके घर धमक पड़ती है, नारी यातना पर कविता करता कवि झुंझला उठता है :

"यह कौन है प्रभा जो कांव-कांव किये जा रही है
भईए भगाओ उसे कुछ दे-ओकर
मेरी कविता की लय टूट-टूट जा रही है।"**6**

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अगली रचना 'कविता मनुष्यता का राग है' में कवि ने महज उपदेश देने वाले कवियों की खोज-खबर लेते हुए उन्हें आईना दिखाया है :

"कविता मनुष्यता का राग है
कितनी बार सभाओं में बरसी है उनकी यह अमृत वाणी
आज उनके पड़ोस में
एक लड़के ने जहर पी लिया था
पर कवि जी एक महान कार्य में व्यस्त दिख रहे थे
यानी अपने कमरे में बंद होकर
वे कोई महान कविता लिख रहे थे।"**7**

दोहरे चेहरे वाले समाज के हर वर्ग में मौजूद हैं। ऐसे ही लोगों से सावधान करते हुए कवि कहता है :

कविता मनुष्य को संवेदनशील बनाती है
भाषण देकर निकले
तो उन पर नमस्कार बरसने लगे
वे किसी की ओर देखे बिना
यों ही भीड़ में तने हुए चले गए
जैसे अहसान कर रहे हों उन पर।"**8**

'आग की हँसी' संग्रह में कवि बाजार के खिलाफ़ खुलकर खड़ा होता है। बाजार पर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति से शुरू हुआ सफर धीरे-धीरे हमारी मजबूरी बन गया है और आज स्थिति ये है कि बाजार ने हमारे दिलो-दिमाग से लगायत हमारे घर तक पर कब्जा कर लिया है :

"नया बाजार थोड़ी और जगह घेर लेता है
और लोग थोड़ा और सरक जाते हैं
घर से बाहर की ओर
और एक दिन उन्हें लगता है कि
बाजार उनके घर में है और वे बाजार में"**9**

कवि सावधान करते हुए यह याद दिला रहा है कि बाजार की जगह बाजार ही है। अतः हमें अपने घर को बाजार बनने से रोकना ही होगा अन्यथा इसके परिणाम अत्यंत गंभीर होंगे। घर के टूट कर बाजार बन जाने से मूल्य संकट उपस्थित हो जाएगा और समाज में अव्यवस्था फैल जाएगी। बाजार की विश्वग्राम नामक शाब्दिक चालाकी की आड़ में छिपे खतरनाक मंतव्य को कवि की सूक्ष्म दृष्टि सहज ही पकड़ लेती है :

"विश्व एक हो रहा है
लेकिन बाजार के रूप में।"**10**

जहाँ लोगों में व्याप्त धर्म, संप्रदाय, जातिए ऊँच-नीच की दूरियों को पाटकर एक होना था, वहाँ विश्व अब बाजार के रूप में एक हो रहा है। अर्थात इस समय समाज में दो ही जातियां रह गई हैं अमीर और

गरीब। यदि जेबें भरी हैं तो व्यक्ति विश्व ग्राम का अहम अंग है। यदि जेब में फूटी कौड़ी नहीं है तो आदमी, आदमी कहलाने के भी लायक नहीं है :

"आदमी, आदमी नहीं महज़ क्रेता-विक्रेता है
और संवेदनाएं सामानों में बदल रही है।"**11**

कवि विश्वग्राम के इस अर्थवाद को देखकर सकते में है जहाँ संवेदनाएं बिक रही हैं। उसे अपना गांव और पुराना समय याद आता है जहाँ धनाभाव जरूर थाए पर लोगों में आपसी प्यार और सौहार्द्र बना हुआ था

"माना कि गांव के पूरे परिवेश में अभावों के गहरे दंश थे
लाचारियां थींए विपत्तियों के आघात थे
लेकिन लोगों के हाथ आपस में जुड़े हुए थे
आँखों में आत्मीय संवाद थे
दिलों में त्योहारों का उजास था
रिश्तों की गर्मियां थीं"**12**

बाजार की 'आर्थिक एकता' पर चोट करते हुए कवि अपनी विविधता में एकता की संस्कृति को याद करता है :

हर आदमी का अपना विशेष रंग था
और अलग-अलग रंग गले मिलकर
एक समष्टि रंग रच देते थे।"**13**

बाजार की चकाचौंध में घिरा व्यक्ति दिन.रात क्रय-विक्रय और हानि-लाभ में ही लगा रहता है। स्थिति यह है कि पहले जहाँ अच्छे काम करने वालों की शोहरत हुआ करती थी आज के समय में शोहरत भाग्य वालों की जय-जयकार है और बाजार में फुटपाथ पर बिक रही है। यदि आपके पास धन है तो आप भाग्य वाले हैं अन्यथा आप अभागे हैं।

बाजार के मायाजाल से वही बच सकता है जिसने स्वयं पर नियंत्रण करना सीख लिया। जिसकी आवश्यकताएं सीमित हैंए जो कि स्वयं एक फकीर हैए वही बाजार पर हंसने का साहस कर सकता है :

"कौन लगा रहा है कहकहे ?
यह तो बाजार है
देखा एक फकीर था
जो गली के मोड़ पर कहकहे लगा रहा था
बाजार की ओर मुँह करके"**14**

बाजार की बजबजाहट में फंसे लोगों को कवि सहजता से उसके चंगुल से बाहर आने का रास्ता दिखा देता है।

रामदरश मिश्र अंधविश्वास और भ्रष्टाचार के खिलाफ़ खुल कर लिखते हैं। पत्थर पर सिर पटकते आस्था में अंधे लोगों को कर्म का संदेश देते हुए इसे कबीर की परंपरा से जोड़ देते हैं। मध्ययुग में कबीर जहाँ घर की चाकी की पूजा करने का उपदेश देते हैंए समकाल आते-आते पूरा परिदृश्य ज्यों का त्यों उपस्थित होता है। मंदिर से घर पंहुचने पर रसोईघर में चकले ही इंतजार करते मिलते हैं :

और ज्योंही रसोई घर में पंहुचा
चकले से आवाज आई
अरे तुम कहाँ चले गए थे
मैं तो यहां हूँ **15**

रामदरश मिश्र आधुनिक चेतना के कवि हैं। वर्तमान समय में वे जानते हैं कि धन के बिना जीवन निर्वाह संभव नहीं है। मध्य वर्ग की इसी आर्थिक चिंता को संबल देते हुए वे कहते हैं:

वह पास होता है
तो लगता रहता है कि
जीवन-पथ में आने वाली मुश्किलों से
लड़ाई लड़ ली जायेगी।"**16**

आम आदमी मन से बहुत दृढ़विश्वासी होता है। वह मुश्किल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता और जूझता रहता है :

उसके दो-चार टुकड़ों के लिए बूढ़े भी
भारी-भारी सामानों से लदे ठेले बनकर
सड़क पर घिसट रहे हैं"**17**

कवि बाजार की चाल को बखूबी समझता है। अतः उसकी दृष्टि मध्यम मार्ग पर जाती है और वह कहता है :

"मुझे कागज के ये टुकड़े तो देना
किंतु उतना ही
जितने से जीवन की गाड़ी सहज भाव से चल सके।"**18**

यहाँ भी कवि पर कबीर की ही परंपरा पर का प्रभाव दर्शित होता है :

सांई इतना दीजिए जामे कुटुम समाए
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाए"**19**

मानवता का सच्चा पैरोकार कवि अंधविश्वासों का पुरजोर विरोध करता है, चाहे उसके लिए समाज से कितने ही ताने क्यों न सुनने पड़ें:

मैं पीपल का बड़ा सम्मान करता हूँ
किंतु धर्मांध नहीं हूँ
मेरे लिए सबसे बढ़कर पवित्र मंदिर है अपना घर"**20**

और इसलिए कवि अपने घर की बाहरी दीवार की जड़ में उगे पीपल को काटने में तनिक भी गुरेज नहीं करता :

"एक दिन मैंने कुल्हारी उठाई
और पीपल से कहा.
क्षमा करना देवताए वह जगह आपकी नहीं थी"**21**

देश की राजनीति में कुर्सी के लिए गुत्थम-गुत्था नेताओं का सटीक चित्रण करते हुए उनकी सत्ता लिप्सा को उजागर करते हैं :

"आज 'क' कुर्सी पर है
उसने कहा
देशहित के लिए यह रास्ता सही है"
'ख' ने कहाए बिलकुल नहीं"
कल कुर्सी पर 'ख' था
उसने इसी रास्ते को सही बताया था
तो 'क' ने कहा था बिल्कुल नहीं
उनकी इसी बहस में समय गुजर रहा है
देश का सुख खाली हो रहा है" **22**

कुर्सी के खेल को आम जनता भली-भांति समझती है :

"लोग कुर्सी से जुड़ते हैं और छूटते जाते हैं
कुर्सी ज्यों की त्यों रहती है सलामत-सी
लोग टूटते जाते हैं"**23**

लोग यह जानते हैं कि राजनेता उनके भले के लिए कुछ नहीं करने वाले। उन्हें तो अपना ही पेट भरने से फुरसत नहीं। कवि ने इस जागरण को शब्द दिए हैं :

"हम जानते हैं कि आप हमारे लिए क्या करते हैं
आप दिन को रखवाले बने रहते हैं
और रात में मज़े से हमारा खेत चरते हैं"**24**

इस राजनीतिक त्रासदी और लूट-खसोट के विरुद्ध जनता को खड़े होने का आह्वान करता हुआ कवि सत्यशास्त्र-सा अनशन का रास्ता सुझाता है क्योंकि उसे पता है कि अनीति और अनाचार के विरुए निर्णायक लड़ाई गांधीवादी तरीके से ही लड़ी जा सकती है :

"असत्य के विरुए सत्य का शस्त्र बनकर
अनशन जितना गहराता जाता है
सत्य की धार उतनी ही तेज होती जाती है
कांपने लगती है वह सत्ता और व्यवस्था
अनशन से फूटती शांति ज्योति
उसके भीतर हाहाकार बन जाती है
छिड़ जाता है एक रक्तहीन युद्ध
सत्य और असत्य के बीच
और अंत में झुक जाता है असत्य सत्य के आगे"**25**

भ्रष्टाचार हमारे समय की एक बेहद गंभीर समस्या है जो आम आदमी को सीधे प्रभावित करती है। रामदरश मिश्र 'आग की हँसी' में भ्रष्टाचार की समस्या को प्रमुखता से उठाते हैं :

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"हाँ यहाँ नर देवता रहते हैं
जो लोगों की रोटी छीनकर खाते हैं
कुछ खाते हैंए कुछ फेंक देते हैं
जिसे लूटने के लिए
कुत्तों के साथ वे लोग भी दौड़ पड़ते हैं
जिनकी रोटी छीनी गई होती है"**26**

कुत्तों और मनुष्य में रोटी की छीना-झपटी का दृश्य निराला के भिक्षुक शीर्षक कविता की याद दिला देता है :

"चाट रहे झूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए**27**

सच्चाई यही है कि चाहे हजार बातें की जाएं पर निराला के समय दरिद्र वर्ग की जो स्थिति थी, वही स्थिति रामदरश मिश्र के समय बनी हुई है। बस वर्ष बदल गया है।

भ्रष्टाचार मानो हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। हमें दूसरों द्वारा की जा रही गलतियाँ तो दिखती हैंए पर स्वयं किया जा रहा अनाचार नजर नहीं आता :

"सड़क तो यों ही कम चौड़ी थी
व्यापारियों ने उसे
दोनों ओर से थोड़ा और घेर लिया है"**28**

यहाँ शिकायतों पर कोई समाधान नहीं क्योंकि जिसे समाधान करना हैए वह स्वयं भ्रष्टाचारियों का संरक्षक बना बैठा है :

"पर किससे कोई शिकायत करें
पैसा हँसता है
पुलिस ने मुँह फेर लिया है"**29**

मनुष्य इतना स्वार्थी है कि बिना स्वार्थ के वह ईश्वर की भी जय-जयकार नहीं करता। किंतु भगवान तो खैर भगवान है। वे मनुष्य की कुटिल चालों को बखूबी समझते हैं :

"प्रभु ने व्यंग्य से मुस्कराकर मेरी ओर देखा
बोले तुम्हें गर्व है कि तुमने मुझे जान लिया है
अरे तुमने तो अपने नेताओं और अपने अफसरों की तरह
मुझे भी खुशामद-पसंद मान लिया है"**30**

अंधविश्वास को ठोकर मारता हुआ, भ्रष्टाचार के खिलाफ़ अनशन की प्रेरणा देता हुआ राजनीतिक चेतना जगाता हुआ कवि श्रम को महत्त्व देते हुए स्वावलंबीपन में समस्याओं का समाधान ढूंढता है। वह चिंतित है कि सुविधा में कमी की शिकायत करते-करते कहीं हम सुविधाजीवी न बन जायें। अतः 'हनुमान' के चरित्र से प्रेरणा लेते हुए वह याचना की बजाय उनसे स्वावलंबन की सीख लेना चाहता है :

"मैं कुछ भौतिक सुख पाने को
इनसे याचना नहीं करता

मैं तो चाहता हूँ कि
इनकी थोड़ी.सी ज्योति
मेरे भीतर उतर आए मेरे प्रयत्नों से
ताकि मैं स्वयं लड़ सकूँ
भूतों, पिशाचों और निशाचरों से"**31**

लोगों को कर्म-राग की प्रेरणा देते हुए कवि 'श्रमेव जयते' का राग प्रख्यापित करता है :

"हमारे तो दो हाथ ही हमारे देवता हैं
वे प्रसन्न रहेंगे तो सलामत रहेंगे हम"**32**

जीवन की समस्याओं का समाधान स्वयं प्रयास करने पर ही संभव है :

"प्यासे हो तो चलो कोई कुआं खोजते हैं"**33**

अपनी कविताओं में रामदरश मिश्र लोक जीवन के सौंदर्य को प्रकट करते हैं। उनके लिए दीवाली रंग-बिरंगी बल्बों की लड़ियों में जगमगाता सौंदर्य का त्योहार नहीं है, बल्कि यह प्रकाश-पर्व संवेदना की ज्योति का त्योहार है :

"इस प्रकाश में
माँओए बहनोंए भाभियों के हाथों के स्पर्श बहते रहते हैं"**34**

ये पंक्तियां ग्राम्य जीवन और संयुक्त परिवार के सौंदर्य को सहजता से प्रकट करती हैं जहाँ मिट्टी के दीये से निकलता प्रकाश लोक रंग को जगमग कर जाती है। यह ज्योति दिव्य ज्योति है जहाँ संवेदना विजयी होती है :

"एक दिन हम अनुभव करते हैं
कि ये हमारा रावण राम से परास्त हो गया है
और वही अनुभव दीवाली बनकर जगमगा उठता है"**35**

लोक अपनी धुन में सतत प्रवहमान रहता है। चाहे लाख परेशानियां आयें पर लोक उससे डरकर पीछे नहीं हटता। हर पल उसे अच्छे की आशा लगी रहती है। लोक जानता है कि हर अंधकार के बाद उजाला होना तय है :

"शीत के भयानक काल को तोड़कर
धूप निकल आई है"**36**

अतः इस अंधेरे से डरना क्यों हैघ् वह तो अंधेरे को भी अपने मशाल से परास्त करने का माद्दारखता है

"छोटी ही सहीए एक रोशनी उसके साथ थी
उससे कट-कट कर अंधेरा थरथरा रहा था
और वो धीरे-धीरे मुस्करा रहा था"**37**

निपट अंधेरा भी श्रम की खुशबू को नहीं रोक सक्ता

"एक अंधा सन्नाटा पी रहा था
लेकिन एक फूल कहीं
चुपचाप अपनी ही खुशबू में नहा रहा था

उसका अस्तित्व यहाँ से वहाँ तक महमहा रहा था"**38**

आशा की ज्योति को प्रज्जवलित रखते हुए रामदरश मिश्र लोक से दीप से दीप जलाने का आह्वान करते हैं :

"कोई बात नहीं दोस्तए पहले अपने से शुरू करो
हँसेगी एक छोटी-सी रोशनी
और दीप से दीप चलते चले जाएंगे"**39**

बाजार सुख में खोए आदमी के मूल्य कांच के टुकड़े की तरह टूट कर बिखर गए हैं। आए दिन अखबार चोरीए छिनैतीए डकैतीए लूटपाटए दुर्घटनाएंए हत्याएं, आत्महत्याएं, शातिर चालबाजीयों से भरे पड़े हैं। कवि को लगता है कि वह किसी खून के दलदल में फंस गया है परन्तु जब उसकी नजर कोने में पड़े किसी सुखद समाचार पर जाती है तो उसकी आशा दीप्त हो जाती है :

"लेकिन जब अखबार का
एक उजास भरा कोना दिखाई पड़ जाता है
तब कविता फिर एक नई आशा से दीप्त हो उठती है"**40**

लोक-जीवन में प्रकृति गहरे मिली हुई है। जमीन और लोक के कवि रामदरश मिश्र जब कविता करते हैं तो उनकी संवेदना प्रकृति से भला कैसे अछूती रहे। एक व्यक्ति पेड़ लगाता है और फल उसकी पीढ़ियां खाती हैं। कवि की यह संवेदना वृक्षों के साथ जुड़ती है :

"दोस्तए इतने लोगों के रूप में मैं ही तो आता हूँ
सब कुछ अपने लिए नहीं किया जाता
यह बात तुमसे अधिक कौन समझ सकता है ?
तुम कहाँ जीते हो अपने लिए ?"**41**

जंगल में जहाँ हर समय एक चौकन्ना भय रहता है कि पता नहीं कौन-सा जीव कब किस कमजोर जीव पर टूट पड़े। इसी हिंसक प्रवृत्ति के चलते मनुष्य जंगल से निकल कर शहर में आ गया परंतु यह हिंसक प्रवृत्ति उसके भीतर से नहीं गई। अज्ञेय याद आते हैं :

"सांप तुम शहर में तो नहीं गए
फिर कहाँ से सीखा डसना
यह विष कहाँ पाया ?**42**

रामदरश मिश्र मनुष्य को उसकी हिंसक प्रवृत्तियों से सावधान करते हुए उसे पुनः प्रकृति की गोद में लौटने का आह्वान करते हैं :

"आदमी जंगल का जंगलत्व तो ले आया
किंतु पेड़-पौधों का जीवनदायी हरापन
नदियोंए नालों का कलकल संगीत
खुली हवाओं का प्राण स्पंदन
तरह-तरह के पंक्षियों की चहचहाहट
नाना प्रकार के फूलों की सुगंध का सहगान

वहीं छोड़ आया
और कंक्रीट के निस्पंद भवनों में बंद होकर
यंत्रों से जिंदगी मांग रहा है
तथा स्वयं धीरे-धीरे निर्मन निर्मम यंत्र बनता जा रहा है"**43**

प्रकृति सदैव देती रहती हैए लेती कुछ भी नहीं। रामदरश मिश्र प्रकृति की इस परंपरा की संवेदना को स्पष्ट करते हैं कि कैसे एक नन्हा पौधा बड़ा पेड़ बनकर दूसरों के हित में सर्वस्व अर्पण कर देता है.

"यह पौधा धीरे.धीरे बड़ा होकर
एक छतनार पेड़ बन जाएगा
फूलों और फलों से लद जायेगा
कितने ही लोग उसकी शीतल छांह में
अपनी थकान मिटाएंगेए गुनगुनायेंगे
परस्पर सुख.दुख की बातें करेंगे
ऋतुएं और मौसम
उससे नवजीवन.संवाद करेंगे
पक्षी फल खायेंगेए चहचहायेंगे"**44**

लोक के जीवनोत्सव और प्रकृति के साहचर्य का यह सहज वर्णन मन को सुकून देने वाला है.

"मुझे क्वार की उत्कट प्रतीक्षा रहती है
उस क्वार में समाई रहती है
रामलीला की चहल.पहल
दशहरे के मेले में व्याप्त नई गंध और ध्वनियां
राममय गीतों से स्पंदित राहें"**45**

कवि के यहां हर महीना अपनी विशेषताओं के साथ उपस्थित है .

"धूप में सूख रही होती हैं
मक्के की लाल.लाल बालियां
धान-कोदों के पुवालों से
जिंदगी की महक फूट रही होती हैं"**46**

ग्राम्यांचलए रामदरश मिश्र की कविताओं से सिर्फ झांकता नहीं बल्कि वह स्वाद बन जाता है :

"नये चावलों का स्वाद
नई ऋतु का स्वाद बन जाता है"**47**

प्रकृति के माध्यम से कवि यह संदेश देता है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं। परिवर्तन होना निश्चित है। अतः उसकी चिंता करना व्यर्थ है :

"समझ कि जो होना हैए होगा ही
क्यों सोच मरे"**48**

शहरीकरण ने मनुष्य को एक छद्म आवरण के घेरे में बाँध दिया है। मनुष्य का मुक्त मन छटपता रहा हैए लेकिन उसे निकलने की जगह नहीं मिल रही है। बाजार के माया जाल से घिरा मनुष्य संवेदनहीन हो चुका है। हर जगह वह विजय चाहता हैए किसी भी कीमत परए चाहें उसके लिए हिंसा ही क्यों न करनी पड़े। स्थिति ये है कि ज्ण्टण् पर आने वाले डिस्कवरी याएनीमल चैनल जिन्हें प्रकृति का सौंदर्य दिखाना थाए मनुष्य की आंखें अपने कैमरे से उन पर भी हिंसा ही दिखा रही हैं :

'लेकिन न जाने क्या हो गया है आदमी को
उसके कैमरे की आंख
जंगल में भी देखना चाहती है मारकाट"**49**

शिल्पविधान

'आग की हँसी' संग्रह में संकलित कविताओं का शिल्प विधान स्वाभाविक है। इसका केंद्रीय स्वर मुक्ति-चेतना है। भाषा-सौष्ठव सुगठित है। इनकी रचनायें गहन मानवीय दृष्टि और काव्यात्मक मूल्यों को समग्रता में समेटे हुए हैं।

'आग की हँसी' में कविताओं की भाषा सहज-सरल है। उनकी भाषा में शुए संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ आंचलिक शब्द प्रयोग भी देखने को मिलते हैं।

काव्य-संग्रह ऐसे में जब कभी में स्वयं मिश्र जी ने लिखा है :

"दरअसल भाषा एक ही है
लेकिन उसे विविध अर्थ देते रहते हैं
समय संदर्भ
और हाथों के निजी स्पर्श
ये पहले हमारे अनुभव में उतरते हैं
फिर समा जाते हैं भाषा मेंए अर्थ बनकर।"

लोक जीवन में रमे रामदरश मिश्र की भाषा पर लोक के शब्द अपनी छाप छोड़ते नजर आते हैं :

"इसी चौराहे से गुजरते रहते हैं
अनेक बाबाओं का
जय-जयकार करते हुए जुलूस
जिनमें शामिल होते हैं वे लोग
जो खा-पीकर अघाये होते हैं"

इनकी कविता घर के एक-एक सामानों से बात करते हुए चलती है :

"और ज्योंही रसोई घर में पहुंचा
चकले से आवाज आई
अरे तुम कहाँ चले गए थे ?**50**

'आग की हँसी' में सहज बोलचाल की भाषा का यह प्रयोग दृष्टव्य है

"हाँ उस गांव में अभाव के गहरे दंश थे
किंतु स्वरों का सन्नाटा नहीं था

खेत.खलिहान
बाग-बगीचे
ताल-तलैया
गलियां-रास्ते
सामूहिक लय में गाया करते थे"**51**

मिश्र जी की कविताओं में तुकान्त पदावलीए यतिएलय इन सबका निर्वाह हुआ है :

"मैं पूनों की चांदनी.सी डहडहा रही हूँ
प्रभात की जीवन.रश्मियों में नहा रही हूँ
मुझमें पावस बरस रहा है झर-झर-झर-झर
वसंत की मदमस्त हवाएं फाग गा रहीं हैं"**52**

मिश्र जी की भाषा में मर्मस्पर्शिता और वर्णनात्मकता है। इनकी कविताओं में वस्तुनिष्ठताए वस्तुपरकता तथा संवेदना है। इनकी भाषा में व्यंग्यात्मकता, पैनापन और चुटीलापन भी है :

'कविता मनुष्य को संवेदनशील बनाती है
जगाती रहती है उसकी सुप्त मनुष्यता
भाषण देकर निकले
तो उन पर नमस्कार बरसने लगे
वे किसी की ओर देखे बिना
धीरे-धीरे सिर हिलाकर स्वीकार करते रहे जैसे अहसान कर रहे हों उन पर"**53**

बिंब

लीवीस के अनुसार काव्य बिंब एक प्रकार का भावगर्भित शब्द चित्र है।" https://oldror.lbp.world/UploadedData/9759.pdf बिंब का मूल विषय मूर्त और अमूर्त दोनो प्रकार का हो सकता हैए पर बिंब स्वयं अमूर्त नहीं होता।

रामदरश मिश्र की कविता बिंबात्मक है। उनमें दृश्य बिंबो की बहुलता है। ऐसे बिंब आँखों के समक्ष इंद्रिय संवेदन के साथ मूर्त हो उठते हैं :

"दो ऊंचे-ऊंचे मकान
आमने-सामने तने हुए खड़े हैं
चुप्पियों में गुर्राते हुए
शायद वर्षों पहले
किसी छोटी-सी बात पर
उनके अहंकार टकरा गये थे
कितनी होलियाँ गुजरीं इनके बीच से
कोई होली पुल नहीं बन सकी"**54**

कविता आगे अनेक अर्थों और संदर्भों से जुड़ती जाती है परन्तु सिर्फ 'होली' शब्द से ही प्रेम और सद्भावए मेल-मिलापए रंगोत्सव आदि के दृश्य पटल के सम्मुख सहज ही आ जाते हैं। होली का पुल नहीं बन

पाना त्योहार की अर्थहीनता को प्रख्यापित करता है। कटुता इतनी हो गई है कि टूट जाना मंजूर है पर झुकना नहीं।

रामदरश मिश्र गँवई गाँव के रचनाकार हैं। गांव का मोह शहर के वातानुकूलित कमरे में रहने पर भी नहीं छूटता :

"बुलाता रहता है अपना वह कच्चा घर
जिसकी गोद में मेरे बचपन ने रुप लिया था
अनेक सुखोंए दुखों और सपनों के साथ
जिसमें बहती थी
नदी-सी माँ की ममता
धूप-सा पिता का आशीष
हवा-सा भाई-बहनों का प्यार
जिसके छोटे से आंगन में
चारपाई पर माँ की बगल में लेटकर
निहारता रहता था असीम आकाश
जिसमे रंग.बिरंगे पंछी
पर मारते हुए घर लौट रहे होते थे'**55**

प्रतीक

अनुभूति, भाव या वस्तु की सम्यक व्यंजना ही प्रतीक का लक्ष्य है। रामदरश मिश्र ने अपने काव्य-शिल्प में प्रतीक विधान का सुंदर और सजीव समावेश किया है। इनके प्रतीक सीधे प्रकृति और लोक से लिए गए हैंए जो अति परिचित हैंए इसलिए सहज संप्रेषणीय हैं। उदाहरण वसंत, धूप, आकाशए धरती आदि।

संप्रेषणीयता

"यह समतल लंबी-चौड़ी मटमैली धरती है
यहाँ भूख है, प्यास है
निरंतर रोज़ी-रोटी की तलाश है
लेकिन इस पर लोग साथ.साथ चलते हैं
नीचे गिरने का कोई डर तो नहीं
आकाश में कितना कुछ जगमगाता है
लेकिन वहाँ कोई हमसफ़र तो नहीं।"**56**

जमीन से जुड़ना कितना आवश्यक है, रामदरश मिश्र अपनी इस छोटी कविता में ही स्पष्ट कर देते हैं।

संक्षेप में कहें तो रामदरश मिश्र के काव्य शिल्प का सौष्ठव उनकी गेयताए नवताए मौलिक बिंबविधान, अप्रतिम अप्रस्तुत विधानए नवीन छंद विधान की आधारशिला पर टिका है। मिश्र जी के काव्य-शिल्प ने हिंदी कविता को काव्य सौंदर्य के नये शिखर पर पहुंचाया है और भाषा का नए सिरे से संस्कार और परिष्कार किया है।

निष्कर्ष

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रामदरश मिश्र के काव्य संग्रह 'आग की हँसी' में संकलित कविताएं समकालीन समाज पर हावी हो रहे बाजार के खिलाफ़ खुलकर खड़ी होती हैं। इन कविताओं का स्वर मानवीय मूल्यों को सहेज कर रखता है और हमें बाजार के मकड़जाल में फंसने से आगाह करता है। सावधान करता है उनसेए जो समाज में दोहरा जीवन जीते हैंए जिनके दांत खाने के औरए दिखाने के और हैंए वे सफेदपोश जो मीठी-मीठी बातों में बहलाकर हमारा ही गर्दन रेतने का कार्य कर रहे हैं।

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में रच-बस रहे मनुष्य को सावधान करते हुए कवि कहता है कि धीरे-धीरे हम विचार शून्यता की ओर बढ़ रहे हैं। आवश्यकता का प्रश्न पीछे छूट चुका है। अब तो स्थिति ऐसी है कि बाजार ने हमें अपना गुलाम बनाना शुरू कर दिया है और जाने.अनजाने हम अपने घर को बाजार बनाने पर तुले हुए हैं।

अर्थ-लिप्सा में डूबे इंसान को कवि अपनी सीमा तय करने के लिए कहता है। मध्यवर्गीय मानस अति महत्त्वाकांक्षी होता है। वह हर एक चीज़ में उच्च वर्ग की नकल करना चाहता है। मध्यम वर्ग अपनी वर्तमान स्थिति से हमेशा नाखुश रहता है। उसे लगता है कि उसके पास औरों से बहुत-बहुत कम संपत्ति है और इसी चक्कर में सारा जीवन वह येन.केन.प्रकारेण सबसे आगे निकलने हेतु बेचैन-सा फड़फड़ाता रहता है। कवि मध्यवर्ग को कबीर की परंपरा से जोड़ते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें उतना ही दो जितने में हमारी दाल.रोटी चल सके और हमें भूखा न सोना पड़े।

राजनीति की कड़वी हकीकत से रूबरू कवि बिना लाग-लपेट नेताओं की पोल.पट्टी खोलते हुए कहता है कि ये सारे नेता एक ही थैली के चट्टेबट्टे हैं। इनका एकमात्र काम है जनता को लूटना। जब तक सत्ता में नहीं होता हैंए जिस बात का वह विरोध करता हैए कुर्सी मिलते ही वही उसे ही सही रास्ता बताने लगता है।

'आग की हँसी' संग्रह में कवि ने समस्याओं से जूझ रहे आधुनिक मनुष्य को सही रास्ते की भी पहचान कराई है। वे गांधीवादी तरीके से अनशन की बात करते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य को स्वावलंबी बनना होगा और आत्मबोध करना होगा। लोक जीवन और प्रकृति का वर्णन कर सदैव आशान्वित रहने की प्रेरणा कवि ने दी है है। अतः 'आग की हँसी' काव्य संग्रह आधुनिक मनुष्य को न सिर्फ संभावित खतरे से सावधान करती है बल्कि उसमें आत्मविश्वास जगाकर उन समस्याओं से लड़ते रहने और स्व की शक्ति को पहचान कर आगे बढ़ने का संदेश देती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ.शिवदत्त शर्मा, 2015 संवेदना की अवधारणा और उसके प्रकारए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लायड रिसर्चए 2015, 1 7, 245-248

2 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 9

3 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012,पृष्ठ 9

4 रामदरश मिश्र, आग कुछ नहीं बोलती, 1992

5 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 16

6 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 16

7 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 95

8 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 96
9 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 12
10 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 20
11 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 20
12 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 18
13 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 18ए
14 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 60
15 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 37
16 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 46
17 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 46
18 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 47
19 साखी, कबीर
20 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 77
21 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 77
22 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 80
23 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 84
24 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 83
25 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 88
26 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 87
27 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला भिक्षुक, परिमल
28 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 82
29 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 82
30 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 93
31 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 92
32 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 75
33 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 81
34 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 68
35 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 67-68
36 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 23
37 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 32
38 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 40
39 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 41
40 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 59
41 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 2
42 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, सांप, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये
43 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 43
44 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 49

45 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 62-63
46 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 63
47 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 63
48 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ
49 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 101
50 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 37
51 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 33
52 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 52
53 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 96
54 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 14
55 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 34
56 रामदरश मिश्र, आग की हँसी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ 38